वैदिक धर्म और इस्लाम

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

दर्शनानन्द-ग्रन्थ-संग्रह

रचयिता

श्री स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

अनुवादक

पं० गोकुलप्रसाद दीक्षित 'चन्द्र'

आयुर्वेद महामहोपाध्याय

श्यामलाल सत्यदेव वर्मा

वैदिक आर्य-पुस्तकालय,

बरेली

मूल्य डेढ़ रुपया

प्रकाशक
श्यामलाल सत्यदेव वर्मा
वैदिक आर्य-पुस्तकालय,
बरेली

मुद्रक
पं० मन्नालाल तिवारी
शुक्ल प्रिंटिंग प्रेस, नजीराबाद
लखनऊ.

वैदिक धर्म और अहले-इसलाम के अकायद (विश्वासों) का मुकाबिला

यह कहना तो नितान्त अनुचित है कि अहले-इसलाम में कुछ भी सचाई नहीं अगर तनिक भी सचाई न होती तो मुसलमानों के अस्तित्त्व का स्थिर रहना ही कठिन होता। अहले-इसलाम में सचाई मौजूद है ; परन्तु वह पूर्ण नहीं जहाँ तक मुसलमानों के मन्तव्य वेदों से उद्धृत किये गये हैं वे सम्पूर्ण सत्य से परिपूरित हैं ; परन्तु वेदों की शिक्षा के विपरीत केवल अरब देश के विचार अरबी सुधारक ने लिये हैं न तो वह सत्य ही हैं और न उन्हें मज़हब से ही कुछ सम्बन्ध है। अब हम अहले-इसलाम के मन्तव्यों और वैदिक धर्म के सिद्धान्तों का मुकाबिला करेंगे, जिससे वह अन्तर जो सम्प्रति भ्रम से उत्पन्न होगया है, दूर हो जावे।

वैदिक धर्म

वैदिक धर्म परमात्मा को एक मानता है—उसका कोई शरीक नहीं जानता। उसको सर्वव्यापक निराकार बतलाता है—सर्वान्तर्यामी और सर्व शक्तिमान होने से उसके कामों के वास्ते किसी पैग़म्बर या फरिश्ते की आवश्यकता नहीं बतलाया—परमेश्वर अपने काम बिना सहायता के स्वयं करता है। वह स्वयं प्रत्येक स्थान पर विद्यमान और अपने काम स्वयं करने वाला है।

अहले-इसलाम

अहले-इसलाम खुदा को एक बहदहू लाशरीक अद्वितीय कहते हैं और उसको आसमान पर मान कर दुनियां पर उसके

हुक्म फरिश्तों और पैगम्बरों के द्वारा प्रकट होना मानते हैं, उन्होंने प्रत्येक ईश्वरीय काम के वास्ते एक-एक फरिश्ता मुकर्रर कर रक्खा है, वह अपने गुणों से प्रत्येक स्थान पर विद्यमान है; परन्तु जात से (स्वयं) अर्श मुअल्ला (आसमान) पर है।

अन्वेषण

जब कि ईश्वर को एक मानते हैं तो उसके कामों की सहायता के लिये पैग़म्बरों और फरिश्तों का नियम करना ईश्वर को ससीम ठहराना है। जो उसकी शान (सम्बन्ध) में कुफ्र (नास्तिकता) है। हमारे बहुत से मुसलमान भाई कहेंगे कि हम ईश्वर को अद्वितीय मानते हैं तो हम उनसे प्रश्न करते हैं कि अद्वितीय को तुम ससीम मानते हो या असीम, यदि ससीम मानो तो उसके साकार होने से सावयव मानना पड़ेगा और जो वस्तु सावयव है वह नाश होनेवाली है और जो नाश होने वाली है वह ईश्वर नहीं हो सकती। यदि वह असीम है तो पैग़म्बरों और फरिश्तों का मसला ग़लत होगा; क्योंकि पैग़म्बर कहते हैं पैगाम (समाचार) लाने वाले को और पैगाम सदा फासिले (अन्तर) से आया करता है। यदि ईश्वर और मनुष्यों में अन्तर मान लिया जावे तो ईश्वर ससीम सिद्ध होगा। इसलिये पैग़म्बरी का मसला इन्सानी बनावट है अगर लोग पैग़म्बरों को रिफार्मर (सुधारक) कहें तो ठीक हो सकता है; परन्तु उस दशा में वहो का आना ठीक माना जावे तो भी ईश्वर को सीमाबद्ध मानना पड़ेगा; परन्तु असीम के पास आना जाना नहीं बन सकता। अब ईश्वर को ससीम माने तो नास्तिकपन से बढ़ कर दोषारोपण होता है। इसीलिये वही का आना भी ग़लत मालूम होता है। अब अगर फरिश्ते ख़ुदा के कामों में बतौर एजेण्ट तसलीम किये जावें तो भी ईश्वर को ससीम मानना पड़ेगा; क्योंकि असीम के

एजेण्ट हो नहीं सकते। इसलिये ईश्वर का अद्वैत जो इसलाम में था, वह कायम नहीं रहेगा।

इलहाम और आर्यसमाज

आर्यसमाज सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा की ओर से एक पूर्ण शिक्षा से भरा हुआ इलहाम (ईश्वरीय ज्ञान) नाजिल (प्रकट) होना स्वीकार करता है, जिस प्रकार परमात्मा ने आंखों की सहायता के लिये सृष्टि के आरम्भ में सूरज बनाया, इसी तरह मानुषी बुद्धि को धर्म का मार्ग दिखलाने के वास्ते सृष्टि के आरम्भ में वेद, जो ज्ञान विज्ञान का सूर्य है, उन ऋषियों के दिल में जिनको परमेश्वर ने सब से प्रथम उत्पन्न किया था उपदेश किया और उन्होंने आगे दूसरे ऋषियों को पढ़ाया। इस तरह सृष्टि के आरम्भ से शिक्षा क्रम जारी किया, जिससे सम्पूर्ण सृष्टि पूर्ण लाभ उठाती है। आर्यसमाज ईश्वर के ज्ञान को दूसरी बार प्रकट होना स्वीकार नहीं करता और नाहीं अपूर्ण शिक्षा को ईश्वर का उपदेश कहता है; क्योंकि आवश्यकता के समय आविष्कार करना मानुषी स्वभाव है और आवश्यकता से पूर्व आविष्कृत करना ईश्वर का। कारण कि वह सर्वज्ञ है, इस लिये उसका ज्ञान अपूर्ण नहीं हो सकता कि जिस से वैदिक धर्म में संशोधन अथवा निषेध करना पड़े। मंसूख करने के अर्थ ही उस मंसूख होने-वाले हुक्म की अनावश्यकता वा हानिकारक होने का हेतु है और जो अनावश्यक अथवा हानिकारक उपदेश करता है, वह सर्वज्ञ ईश्वर नहीं कहला सकता। इसलिये ईश्वर को अपूर्ण उपदेश का देने वाला मानना उसकी विद्वत्ता पर धब्बा लगाना है।

इलहाम और अहले इसलाम

अहले इसलाम भी ईश्वर की ओर से इलहाम का नाजिल होना

तसलीम करते हैं; परन्तु उनके यहाँ ईश्वर की आज्ञा जो इलहाम के द्वारा दुनियाँ पर नाजिल होती है, उसे बराबर बदलता रहता है और ईश्वर सदैव नवीन-नवीन पैग़म्बर भेजता रहता है और जो पैग़म्बर आता है, वह ख़ुदा की तरफ़ से नई आज्ञा लाता है। पहली आज्ञा का निषिद्ध करता है—अहलेइसलाम के ख़्याल में जो हाकिम आवेगा, उसी का कानून या शरीयत प्रचलित होगी। गोया वह पैग़म्बरों की तब्दीली को हाकिम की तब्दीली समझते हैं, जिससे सिद्ध होता है कि उनका हाकिम ईश्वर नहीं बल्कि पैग़म्बरों को हाकिम मान कर भी उनके कानून का बदलना तसलीम करते हैं—जो लोग ख़ुदा को हाकिम मानते हैं, उनके ख़्याल में शरीयत का बदलना नामुमकिन हो सकता है और जो लोग पैग़म्बरों को हाकिम मानते हैं, उनके ख़्याल में शरीयत का बदलना आवश्यक बात है। जब मूंसा आया तब उसने तौरेत प्रकट की और जब दाऊद आया तब जबूर हुई। जब मसीह आया, इंजील आई और जब मुहम्मद साहब का वक्त आया तब क़ुरान नाज़िल हुआ—अब स्पष्ट प्रकट है कि ये पुस्तकें ईश्वरीय ज्ञान की नहीं प्रत्युत उपर्युक्त पैग़म्बरों की आज्ञायें हैं, जो कि उनके पश्चात् दूसरे पैग़म्बरों की शरीयत से निर्षिद्ध हो जाती हैं। जिस प्रकार अकबर का क़ानून जहाँगीर के समय तक रहा, जहांगीर का क़ानून शाहजहाँ के समय में बदल गया, इससे स्पष्ट प्रकट होता है कि अहले इसलाम के यहाँ कोई इलहाम नहीं बल्कि शरीयत हैं।

रूह—जीवात्मा और आर्य्यसमाज

आर्यसमाज के सभासद वेदों की शिक्षा के अनुसार आत्मा को अनादि और ईश्वर की मिलकियत समझते हैं, उनके विचार में जीवात्मा कभी अभाव से भाव में नहीं आई; परन्तु उसका

शरीर के साथ सम्बन्ध होता है, जिसे उत्पन्न होना कहते हैं। क्योंकि उत्पन्न होने के अर्थ—प्रकट होना है और आत्मा शरीर के बिना किसी प्रकार प्रकट नहीं हो सकती। इस वास्ते शारीरिक सम्बन्ध को लोग उत्पत्ति कहते हैं और जीवात्मा का एक शरीर को छोड़कर दूसरे में जाना स्वीकार करते हैं और उनके खयाल में जीव शरीर से पृथक् होना मृत्यु है।

जीव और अहले इसलाम

मुसलमानों के सिद्धान्तानुकूल जीवात्मा उत्पन्न हुआ—और वह शरीर के साथ ही उत्पन्न होता है: परन्तु जीव का नाश होना स्वीकार नहीं करते—जीवात्मा अपने शुभाशुभ कर्मों का फल सुदूर तक भोगता रहेगा, वह शरीर से एक बार निकलकर दुबारा जन्म नहीं लेगा—क़यामत (प्रलय) के दिन वह अपने कर्मों के हिसाब के वास्ते ईश्वरीय दरबार में पेश होगा, मृत्यु के दिन से प्रलय तक न मालूम कहाँ रहेगी।

अन्वेषण

अहले इसलाम की रूह न तो वाजिबुलवजूद है; क्योंकि वाजिबुलवजूद उत्पत्ति से रहित होता है और नाहीं मुमकिन-उलवजूद है; क्योंकि मुमकिनउलवजूद का नाश आवश्यक है सिवाय वाजिबुलवजूद और मुमकिनउलवजूद के तीसरे मुमतनउलवजूद ही हो सकता है, क्या जिस मत में जीवात्मा हो मुमतनउलवजूद हो उस मज़हब में कभी इल्मरूहानी हो सकता है! लेकिन जब पथप्रदर्शक अशिक्षित अर्थात् नितान्त विद्या रहित हों तो ऐसी असत्य बातें मज़हब में दाखिल होना ही चाहिये यह आश्चर्य नहीं। यतः जीव के बिना मनुष्य के शरीर में विवेक नहीं हो सकता

जैसा कि मुर्दे के शरीर को देखने से प्रकट है ; परन्तु जीवित मनुष्य विवेक रखता है, जिससे मालूम होता है कि मनुष्य, शरीर और जीव दो वस्तुओं का नाम है पस मुसलमानों के मत के अनुसार जो रूह मुमतनउलवजूद की सीमा में आती है वह जीव संसार में मौजूद है। जिससे स्पष्ट प्रकट है कि मुसलमानों के सिद्धांत विद्या और बुद्धि के अनुसार नितान्त मिथ्या हैं कोई योग्य से योग्य विद्वान और मौलवी मुसलमानों के सिद्धान्त को विद्या और बुद्धि के अनुसार सिद्ध नहीं कर सकता। इसी वास्ते मुसलमानों के बुजुर्गों ने अक़ायद इसलाम में अक़ल के दख़ल को मने किया था और मन्तक़ (तर्क) पढ़नेवालों को तुच्छ दृष्टि से देखा था और सिवाय तलवार के मुसलमानों की सदाक़त की कोई दलील पेश नहीं की थी ; परन्तु अब समय आ गया कि जिस प्रकार और पैगम्बरों की उम्मतें अपने ग़लत अक़ायद की वजह से तबाह हो गईं वैसे ही इसलाम का भी इल्म और अक़्ल समय पर व्यर्थ-सा साबित हुआ। इस वास्ते इसलाम के विद्वान, तावीलों के भरोसे पर अक़ायद इसलाम को परीक्षा पर लाने को तैयार हो गये, जिससे दिन प्रति दिन इसलाम की क़लई खुलने लगी।

मुक्ति

मज़हब की इल्लत गाई ही निजात जिसके अर्थ छूटना है—किससे छूटना ? पाशविक इच्छाओं से, जो पाप और दुःख का हेतु हैं—जिन मतों की मुक्ति अपनी इच्छाओं से रहित नहीं वस्तुतः उस मत के प्रवर्तकों को मुक्ति का पता ही नहीं लगा इसलिये मतों के मुकाबिले में मुक्ति के सिद्धान्त की ओर ध्यान देना सबसे आवश्यक है, इसलिये यहाँ मुक्ति के सिद्धान्त का अन्वेषण किया जाता है।

आर्यों की मुक्ति

आर्य लोग मुक्ति में किसी प्रकार का इन्द्रिय—सुख नहीं मानते। बल्कि तमाम दुःखों से छूटकर ब्रह्मानन्द को प्राप्त करना मुक्ति ख्याल करते हैं चूँकि मुक्ति के कारण हैं और जो वस्तु कारणों से उत्पन्न हो वह वाजिबुलवजूद हो नहीं सकती। इसलिये वह मुक्ति को मुमकिन उल वजूद अर्थात् आदि और अन्तवाला स्वीकार करते हैं।

मुसलमानों की मुक्ति

मुसलमान लोग आत्मिक मुक्ति से तो नितान्त अपरिचित हैं इनकी मुक्ति ७० हूरें अर्थात् सुन्दर स्त्रियाँ और 'गिलमान' अर्थात् खूबसूरत लौंडे मोती के रंगवाले और एक प्रकार का मद्य और 'खजूर' आदि मेवा अर्थात् इन्द्रियों की इच्छाओं के पूरे करने के सामान हैं। अहलेइसलाम मुक्ति को उत्पन्न हुआ तो मानते हैं; परन्तु प्रलय तक मानने से उसका नाश नहीं मानते। इसलाम की समझ में उसकी मुक्ति इन्द्रियों की इच्छाओं में पूर्ण होने के कारण मुक्ति कहलाने के योग्य नहीं; किन्तु जो इच्छायें मुसलमान मत के संस्थापक के हृदय में थीं, जिनकी शिक्षा 'कुरान' से निकलती है वही वस्तु बहिश्त में बतलादी। कुल मुसलमानों के लिये एक साथ चार औरतों के साथ निकाह विहित रक्खा; परन्तु स्वयं उससे अधिक स्त्रियाँ कीं, जिस पर समझदार समझ सकता है कि इसलाम का संस्थापक बहुत-सी स्त्रियों की, इच्छा-वाला था इस वास्ते स्वर्ग में उसने ७० हूरें बतलाईं और यतः आप अशिक्षित थे इसलिये मुक्ति के स्थान को छोड़कर मुमतनउलवजूद के गढ़े में जागिरे। क्योंकि इसलाम की मुक्ति मुमतनउलवजूद है कारण यह है कि इसलाम की मुक्ति का आदि

है और उसके कारण भी हैं इसलिये वह वाजिबुलवजूद की सीमा से बाहर है। यतः वह प्रलय तक रहनेवाला है इसलिये उसका अन्त नहीं? अतएव मुमकिनुलवजूद की सीमा से बाहर है क्योंकि मुमकिनउलवजूद दो नफ़ी (शून्यों) के मध्य होना आवश्यक है और प्रलय तक की मुक्ति में एक शून्य है, जो उसकी उत्पत्ति से पूर्व थी और दूसरी शून्य जो नाश के पश्चात् होती है प्रलय तक होने से विद्यमान नहीं। जिसने इस मसले को हरएक वस्तु नाश होनेवाली है रद कर दिया, इसलिये प्रलयान्त तक की मुक्ति न तो वाजिबुलवजूद है और नहीं मुमकिनुलवजूद लिहाज़ा मुमतनउलवजूद होने में क्या शक है। बस विद्वान् लोग इसलाम को मुमतनउलवजूद के गढ़े में गिरा हुआ ख़्याल करते हैं। अव्वल उनका जीवात्मा मुमतनतनउलवजूद दूसरे उनकी मुक्ति मुमतनवजूद इसलिये जब कर्ता का अस्तित्त्व ही इसलाम में मुमतनउलवजूद है तो मुसलमान मतानुयायियों को नारी होना आवश्यक है। इसलिये इसलाम के ७३ फिरकों में से विश्वासों की अपेक्षा से ७२ संप्रदाय नारी हैं केवल एक फ़िरक़ा नाजी है सो उसका कुछ पता नहीं कि कौन-सा फ़िरक़ा नाजी है। बलिहाज़ ऐमाल तो एक फ़िरक़ा भी नाजी नहीं, जब अहले इसलाम की मुक्ति की यह दशा है कि न तो बलिहाज़ अक़ायद कोई नाजी और निजात मुमतनउलवजूद फिर किस प्रकार कोई बुद्धिमान इसलाम में जा सकता है; परन्तु मूर्ख और विषयों के दास हूरें खजूर शराब तथा गिलमान के लालच से इस मजहब को स्वीकार कर सकते हैं। इसी वास्ते रसूल ने अव्वल तो ४ यार बनाये अर्थात् २ जमाई और २ सुसर अर्थात् "अली" और "उसमान्" तो हजरत के जमाई थे 'उमर' तथा 'अबूबकर' २ सुसर थे जब ये घर का समुदान बन गया तो 'जैद' गुलाम

और कुछ रिश्तेदारों को मिलाकर तलवार के जोर से इसलाम को फैलाया—हजरत के जीवन चरित्र को देखने से स्पष्ट मालूम होता है कि 'अहद' और 'बदर' के युद्धों में तथा अन्यान्य अवसरों पर हजरत के दाँत तक शहीद हुए ; परन्तु क्या कोई आत्मविद्या का प्रेमी इसलाम को ईश्वर की ओर से मान सकता है ! जब कि न तो इसलाम में आत्मविद्या और न मुक्ति में ब्रह्मानन्द का लेश प्रत्युत विषयों के भोग और वह भी मुमतनउलवजूद पस यदि ऐसे ही मत ईश्वरीय कहलाने लगे तो यह लोकोक्ति चरितार्थ होगी।

अगर ईं मुकतबस्त ईं मुल्लां।
कारे तिफलां तमाम खवाहिद शुद ॥

अक़ाएद इसलाम पर अक़ली नजर

प्रिय मित्रो ! मुसलमानों के विश्वास में मुक्ति का आदि तो माना हुआ सिद्धान्त है ; परन्तु उसका अन्त नहीं। अब आप सोचें कि जब सृष्टि नियम तो यह है कि प्रत्येक वस्तु जिसका आदि होता है नाशवान् मालूम देती है; परन्तु इसलाम आदिवाली वस्तु को प्रलय तक रहनेवाली मानता है यह भूल बहुत भारी है। इसके अतिरिक्त जब ये देखा जाता है कि संसार में एक किनारे वाला दरिया कहीं नजर नहीं आता, चाहे किसी चीज के किनारे न हों ये दूसरी बात है यदि किनारा हो तो एक कभी नहीं हो सकता—अर्थात् जिसका आदि न हो, उसका अन्त नहीं होता परन्तु जिसका आदि हो उसका अन्त भी अवश्य है। यतः मुसलमानों के विश्वासों में इस प्रकार की असंख्य विद्या और बुद्धि की निर्बलतायें विद्यमान थीं और मुबाहिसे (विवाद) में अहले इसलाम उनके सिद्ध करने में अशक्त थे, इसलिये इसलाम में मजहब की अक़ल से तहकीकात न करना बतलाया है।

प्रिय महाशयो ! मुसलमानों के विश्वासों में मसलए—क़यामत (प्रलय का सिद्धान्त) भी एक माना हुआ सिद्धांत है ; परन्तु इस मसले पर विचार करने से मुसलमानी मत के संस्थापकों के विद्या और बुद्धि से शून्य होने का प्रमाण स्पष्ट रीति पर मिल जाता है।

हमारे मुसलमान भाई अपने विश्वासों में ये मानते हैं कि जब कोई मनुष्य मर जाता है तो मुनकिर व नकीर व दो फरिश्ते उसकी कब्र पर आकर चन्द सवाल करते हैं और उसके पश्चात् प्रलय के दिन ईश्वर प्रत्येक मनुष्य के कर्मों का हिसाब करता है इसका प्रमाण मुहम्मद साहब के लाहौर के छपे उर्दू जीवनचरित्र के पृ० २५० और २५१ के देखने से स्पष्ट मिलता है ; क्योंकि मुहम्मद साहब का इकलौता बेटा इब्राहीम मर गया तो उसकी कब्र पर मुहम्मद साहब ने ये शब्द कहे कि—"ऐ मेरे बेटे ये बात कह कि खुदा मेरा मालिक है—खुदा का रसूल मेरा बाप था और मेरा मजहब इसलाम।"

यह कारवाई मुहम्मद साहब ने इस लिये की थी कि बच्चे को फरिश्तों के प्रश्नों के उत्तर देने के लिये तय्यार करे जो मुसलमानों के धार्मिक विश्वास के अनुसार मुर्दे को क़ब्र में देने पड़ते हैं।

प्रिय मित्रो ! आप ग़ौर से सोचें कि मुहम्मद साहब और उनके मानने वाले मुसलमानों को इस बात का ज्ञान नहीं कि मृत्यु केवल जीव और शरीर के पृथक् होने का नाम है जब जीव शरीर से निकल जाता है तब मृतक कहलाता है। इस दशा में वह किसी के प्रश्न का उत्तर नहीं हो सकता और मुर्दे का क़ब्र में डाल कर उससे प्रश्नोत्तर करना क्या अर्थ रखता है ! क्योंकि कर्म करने वाला जीव तो शरीर से पहले पृथक् हो चुका अब

मृतक शरीर जिसने स्वयं कोई कर्म नहीं किया, केवल जीव ने जो इस शरीर का स्वामी था, कर्म किये थे। अब इस बेचारे शरीर से उन दोषों के सम्बन्ध में प्रश्न किये जाते हैं, यहाँ पर यह लोकोक्ति चरितार्थ होती है—

एक सीधा सादा सिपाही कहीं जा रहा था, मार्ग में उसे ज्ञात हुआ कि कोई आदमी किसी निर्दोषी का वध कर रहा है—वह तत्काल उस ओर पहुँचा परन्तु उसके पहुँचने से पूर्व ही वधिक ने उसको वध कर दिया था, अब सिपाही उसके पीछे दौड़ा, उस वधिक ने अपनी तलवार को फेंक दिया। सिपाही ने अपने सीधे-पन से यह समझ लिया कि बस वधिक का पीछा छोड़कर तलवार को पकड़ थाने में लाया और वहाँ पर लिखवा दिया कि इसने एक आदमी का खून किया है, इस वास्ते इस अपराधी को पकड़ कर लाया हूँ। अकस्मात् दारोगा भी इसी प्रकार के थे, उन्होंने तलवार से प्रश्न किया कि क्योंरी! तूने मेरे इलाके में खून किया? भला तलवार इसका क्या जवाब देती—दारोगा साहब ग़ुस्से में आ चिल्लाकर बोले—तू उत्तर क्यों नहीं देती—निदान इसी प्रकार एक घंटे तक अपनी मूर्खता से तलवार पर क्रोध किया; परन्तु उत्तर न मिला। इतने में एक समझदार आदमी वहाँ पर आ गया, उन्होंने इस तमाशे को देखकर पूछा—अरे भाई क्या मुआमिला है? सिपाही ने कहा—अजी महाशय! मेरे सामने इस तलवार ने एक आदमी का वध किया। अब हम इससे प्रश्न करते हैं तो उत्तर नहीं देती, यह बड़ी ढीठ है। उस समझदार ने उनकी बेवकूफी को मालूम करके कहा—कहो जमादार इस मनुष्य को इसी तलवार ही ने वध किया था, या इसके साथ कोई और भी था? सिपाही ने कहा—महाशय! एक आदमी और भी था, जो भाग गया था; परन्तु काटा तो इसी ने।

समझदार—तुमने आदमी को क्यों न पकड़ा ?

सिपाही—महाशय ! वह भाग गया और मुझे पकड़ने की आवश्यकता भी न थी ; क्योंकि वध तो इसने किया था, न कि उसने।

क्या उसके बिना यह अकेली कतल कर सकती है ?

सिपाही—क्या वह इसके बिना क़तल कर सकता था ?

समझदार—तो यह कहो न, कि दोनों ने मिलकर कत्ल किया, फिर तुम अकेले को क्यों पकड़ लाये ?

सिपाही—महाशय ! वह साथी नहीं था ; क्योंकि भाग गया अगर इसका साथी होता तो इसे छोड़ कर भाग क्यों जाता ?

समझदार—सच है जनाब ! उसके पकड़ने में तो कष्ट भी होता, इस वास्ते आप इसी को पकड़ लाये, खैर यह तो बतलाइये कि कत्ल इसने किस प्रकार किया, जब कि उसके भीतर इच्छा ही न थी और वह इसके बिना दूसरे शस्त्र से वध कर सकता था ; परन्तु यह उसके बिना कुछ भी न कर सकती थी—समझदार आदमी की इस बात को सुनकर सिपाही घबराकर बोला—सुनो महाशय ! तुम पुलिस से तर्कवाद करते हो—हमारे इलाके में विद्या और बुद्धि का प्रवेश नहीं, यदि यहाँ उनको दखल दिया जाता तो ये हमारी कुल प्रजा को कल ही विद्रोही बना देते, कोई भी हमारा नाम लेता न रहता, तुमको हम इस वक़्त हुक्म देते हैं कि तत्काल हमारे इलाक़े से बाहर चले जाओ, यदि तुमने फिर कभी यहाँ आने का विचार किया तो विद्रोही के अपराध में फाँसी दी जावेगी।

प्रिय मित्रो ! ये अन्धेर नगरी चौपट राजा का मुआमला अक़ायद इसलाम में मौजूद है। जो तर्क को दखल दे, वह नास्तिक कहलाये और जो तर्कशून्य—पशुओं की भाँति बुद्धि और

विद्या के विपरीत बातों को अपना सिद्धान्त बतलावे, वह मौमिन (धर्मात्मा) है।

यह आक्षेप जनक वार्ता थी अब असल मजमून की ओर विचार कीजिए। अगर मुसलमान भाई ये कहें कि मुर्दों में भी जीवात्मा होता है और उसकी कब्र में जाता है तो इससे बढ़ कर दावा बेदलील और क्या हो सकता है ? क्योंकि मृतकों में जीव का कोई गुण मालूम नहीं होता ; चूंकि ससीम ईश्वर जो कि तख्त पर बैठा हुआ है, आत्मा जैसी सूक्ष्म वस्तु को पकड़ नहीं सकता था और नाहीं उसके फ़रिश्तों में बेसबब ससीम और साकार होने के ये शक्ति है, इसलिये बेचारे ने शरीर से ही प्रश्नोत्तर करने प्रारम्भ कर दिये। दूसरे इस सिद्धान्त से ईश्वर दूसरे का आश्रित ठहर जाता है। क्योंकि इसका काम एजेण्टों के बिना चल नहीं सकता। तीसरे ईश्वर के सर्वज्ञ होने पर भी इसमें दोष आरोपण होता है। क्योंकि प्रश्न अज्ञता की दशा में हुआ करता है, जैसा कि एक योग्य आदमी लिखता है—"चूं दानी व परसी सवालत ख़तास्त" अर्थात् "अगर तू जानता है और पूछता है तो तेरा सवाल ग़लत है।" चूंकि ईश्वर सर्वज्ञ है इसलिये मुनकिर और नकीर के द्वारा प्रश्नोत्तर करके उससे ईश्वर का शुभाशुभ कर्मों का फल देना मूर्खों की मनगढ़न्त है ; जिस प्रकार हिन्दू मूर्खों ने, यम और उसके दूत और चित्रगुप्त और उसका वहीखाता गढ़ लिया है, इसी प्रकार मुसलमान मूर्खों ने मुनकिर और नकीर का मसला गढ़ लिया है। अब रहा प्रलय के दिन का हिसाब, इसमें यह आक्षेप उत्पन्न होता है कि जो मनुष्य मरता है, उसका जीव प्रलय के पहले यहाँ रहता है और शुभाशुभ कर्मों के लिये एक ही हवालात नियत है या पृथक्-पृथक् स्थान। यदि कहो कि एक ही स्थान तो इससे बढ़कर अत्याचार

और क्या हो सकता है ? "अन्धेर नगरी चौपट राजा—टके सेर भाजी टके सेर खाजा" अर्थात् नेकों को भी हवालात और बदों को भी ऐसा अंधेर किसी सांसारिक राजा के राज्य में नहीं तो उस न्यायकारी जगदीश्वर के राज्य में किस प्रकार हो सकता है यदि कहो कि नेकों के लिये पृथक् जगह नियत है और बदों के लिये पृथक् तो वहां सुख दुःख होगा ही बस न्याय हो चुका, अब प्रलय की आवश्यकता ही क्या है। क्योंकि जीव नित्य मरते हैं और नित्य ही ईश्वर उनके कर्मानुसार उन्हें अच्छे या बुरे शरीरों वा मकानों में पहुँचाता है। अतः जब कि ईश्वर नित्य प्रति कर्मानुसार अच्छी या बुरी दशा को पहुँचाता है तो प्रलय का सिद्धान्त बिल-कुल गलत है और हिसाब करना भी अविद्या के रोग की औषधि है अन्यथा सर्वज्ञ तो हिसाब से पहले ही उसके कर्मों की समस्त व्यवस्था को जानता है और उसी के अनुसार दुःख वा सुख की जगह में पहुँचाता है ॥

प्रिय मित्रो ! मुसलमानों के कयामत के मसले (मुक्ति के सिद्धान्त से) इसलाम की इन वस्तुओं की अनभिज्ञता स्पष्ट रीति पर प्रकट होजाती है अर्थात् प्रथम तो इसलाम के संस्थापकों को आत्मा के अस्तित्व का कुछ भी ज्ञान न था, दूसरे ईश्वर के सर्वज्ञ आदि गुणों से नितान्त अनभिज्ञ थे, तीसरे मृत्यु का भी ज्ञान न था यदि कोई मुसलमानों की पुस्तकों को अन्वेषण की दृष्टि से पढ़े या मुसलमानों के विश्वासों को बुद्धिपूर्वक सोचे तो उसे मानना पड़ेगा कि इसलाम में आत्मविद्या का नाम भी नहीं होता जबकि उनकी ईश्वरीय पुस्तक में इस का कुछ भी वर्णन नहीं और न मुसलमानों के ईश्वर को जीव के अस्तित्व का ज्ञान मालूम होता है, जिससे स्पष्ट रीति पर पाया जाता है कि यह मत मानुषी-गढ़न्त है, इसमें जो कुछ सचाई है वह दूसरे मतों से ली

गई है जैसे "ईश्वर को एक मानना" यह वैदिक धर्म से लिया गया है। जैसा कि हम ट्रैक्ट नं० २ में दिखा चुके हैं। हाँ उसके पास जो कुछ अपना है, वह यह है कि मुहम्मद सली अल्लाह अलैउस्सलम पैगम्बर आखिर उल जगा अर्थात् सबसे अन्त का है और ईश्वर की पुस्तकों में संशोधन वा न्यूनाधिक्य होता है। कुरान खुदा की पुस्तक है या मजहब में अकल को दखल नहीं है या मजहब के वास्ते तलवार से काम लेना चाहिये दूसरे की धन सम्पत्ति को लूटकर लौंडी गुलाम बनालो या दूसरे लोगों के धार्मिक मन्दिर गिरादो—सधवा स्त्रियें लूट में आने से हलाल (विहित) हैं, इसी प्रकार की कतिपय और बातें हैं, जिनमें आध्यात्मिकता का नाम तक भी नहीं और न सचाई का उससे कोई सम्बन्ध हो सकता है।

प्रिय महाशयों! हमारे मुसलमान भाई प्रायः सगर्व कहा करते हैं कि इसलाम की बराबर दुनियां में कोई मत नहीं; परन्तु वह उसको बुद्धि से सिद्ध करहीं नहीं सकते; क्योंकि उन्होंने अन्वेषण में बुद्धि से काम नहीं लिया, अब उनकी आध्यात्मिक विद्या पर कुछ और लिखा जाता है। मुसलमानों के मत में जीव का उत्पन्न होना माना गया है परन्तु प्रश्न यह है कि जीवात्मा साकार है वा निराकार! यदि कहो साकार है तो उसका शरीर सावयव है वा निरवयव यदि कहो सावयव है तो उसका निर्माण किन वस्तुओं से हुआ है और वह नाशवान भी होगा। यतः संयोग के वास्ते परमाणुओं के अतिरिक्त और कोई वस्तु नहीं तो सावयव मानने से परमाणुओं के संयोग से आत्मा की उत्पत्ति माननी पड़ेगी इस दशा में जीव और शरीर दोनों प्राकृतिक ठहर जावेंगे और यदि कहीं निरवयय है तो परमाणु सिद्ध होगा। प्रिय मित्रो! यतः प्रकृति में विद्या का गुण नहीं अर्थात्

प्रकृति के अवयवों में विद्या का गुण नहीं पाया जाता और जो गुण कारण में विद्यमान न हो उसको संयुक्त में मानना नितान्त विद्या और बुद्धि के विपरीत है ; क्योंकि हमने कभी नहीं देखा कि १० गर्भ औषधियों के संयोग से सर्दी उत्पन्न होजावे अभाव से भाव की उत्पत्ति सिवाय मूर्खों के कोई भी नहीं मान सकता ; क्योंकि उस दशा में कार्य और कारण का सिद्धान्त ही जाता रहेगा—और जब कार्य कारण का सिद्धान्त गिर गया तो इस सिद्धान्त से जिस प्रकार कारण को देखकर कार्य की उत्पत्ति का ख़्याल किया जाता है, वह सब ग़लत हो जावेगा और उस वक़्त सिवाय मोटे-मोटे सिद्धांतों के कुल आने वाले काम बन्द हो जावेंगे। यतः मनुष्य और पशुओं में केवल इतना अन्तर है कि मनुष्य कारण को देखकर कार्य की उत्पत्ति का ख़्याल करके आगे के लिये प्रबन्ध करता है ये सब काम बन्द हो जावेंगे केवल पशुओं की भाँति वर्तमान का प्रबन्ध करना ही मनुष्य का कर्त्तव्य हो जायगा।

प्रिय मित्रो ! उसलाम की इलहामी पुस्तक में जैसी परस्पर विरुद्ध आज्ञायें हैं, इनके देखने से मालूम होता है कि इन पुस्तकों का बनानेवाला विद्या से शून्य था ; क्योंकि विद्वान पुरुष अपनी बात को आप काट नहीं सकता। जब साधारण विद्वान् अपनी बात को समझकर कहते और उसका पालन करते हैं तो ईश्वर जो नितान्त सर्वज्ञ और अद्वितीय है किस प्रकार अपनी बात का खण्डन कर सकता है और कुरान में तो एक स्थान पर ईश्वर को सबका स्वामी बतलाया गया है। देखो सूरत फ़ातहा परन्तु बहुत जगह "क़त्लुल काफ़िरीन" अर्थात् "काफिरों के कत्ल" की आज्ञा दी गई है—बहुत से लोग कहते हैं कि काफ़िर किसे कहते हैं अगर कहो जो ख़ुदा को न मानता हो—वह काफ़िर है अथवा जो

ईश्वर को उसके सर्वोत्कृष्ट गुणों को पृथक् करके केवल उसकी निर्बलतायें आविष्कृत करके ईश्वर का अपमान करता हो—जैसे मूर्तिपूजक इत्यादि ईश्वर की महत्ता के विपरीत कार्य करते हैं तो इसलाम पर नास्तिकता का दोष स्वयं आजाता है ; क्योंकि उसने असीम ईश्वर की जगह ससीम और अनादि स्वामी के स्थान में उत्पन्न हुआ स्वामी और पुरातन के स्थान पर नूतन सिंहासनासीन और सर्व शक्तिमान् को दूसरों को आश्रित बना दिया, जिससे दुनियां में चारों तरफ़ पापों का ज़ोर फैल गया और यदि आप ध्यान से देखें तो वर्त्तमान समय में भी इसलाम की असत्य शिक्षा के कारण लाखों निर्दोष व्यक्तियों के खून हो रहे हैं, करोड़ों मनुष्य मूर्खता के रोग में ग्रसित हैं और असंख्य आदमियों ने पक्षपात के कारण सचाई से शत्रुता ग्रहण करली है।

प्रिय पाठको ! यदि आप देखें कि इसलाम में कितने आदमी ईमानदार हैं जो आत्म संयम करते हैं, जिनके हृदय में न्याय और सचाई का घर है और जिनको ईश्वर का भय है तो आप बहुत ही कम व्यक्ति इस प्रकार के पायेंगे—अगर रंडियों का गिरोह है तो इसलाम में—अगर मूर्खता का ज़ोर है तो इसलाम में, अगर पक्षपात और रक्तपात का शोर है तो इसलाम में—इसकी बड़ी भारी वजह यह है कि धुने, जुलाहे, कसाई, भठियारे, चिड़ीमार इत्यादि समस्त क्षुद्र जातियाँ इसलाम पृष्ठपोषक हैं, जिनमें अविद्या के कारण क्रोध, स्वार्थपरता और आवेश अधिक होता है और क्षुद्रता के कारण अच्छी संगति से नितान्त शून्य होते हैं—प्रिय मित्रो ! इसलाम के क्षुद्र—लोग ही स्वार्थी नहीं होते प्रत्युत बड़े-बड़े विद्वान् और संयमी मुसलमान भी स्वार्थ के वशीभूत पाये गये हैं—तथा इसलाम के बड़े सहायक और संयमी बादशाह आलमगीर का हाल पढ़ो तो

इसलाम की शिक्षा की सारी कैफ़ियत ग़लत होती हुई दृष्टि आवेगी—आलमगीर ने बाप को क़ैद किया—भाइयों को धोखा देकर मरवा डाला—अपने निकटवर्ती वंश में से अपनी सन्तान के अतिरिक्त किसी को शेष न छोड़ा, क्या इसलाम ने उसको इस पाप से रोका ? बिलकुल नहीं—क्या उसको किसी ने बुरा कहा बिलकुल नहीं—सोचने का स्थान है कि जिस मत में पिता की प्रतिष्ठा के स्थान में उनको क़ैद करना दुरुस्त, हो वह मत ईश्वर की ओर से हो सकता है ? यदि किसी साम्प्रदायिक प्रयोजन से यह काम जारी होता तो कदाचित् कोई मुसलमान जुबान हिला भी सकता ; परन्तु अब किसी के पास उत्तर ही नहीं। क्योंकि औरंगज़ेब ने अपने पिता शाहजहाँ को जो राज-सिंहासन का अधिकारी था, राज्य देना चाहता था क्या अपने भाइयों को जो मुसलमान हो मार डालना ईमानदारी है, जैसा कि औरंगज़ेब ने किया।

प्रिय महाशयो ! यदि आप इस अत्याचारी बादशाह के सम्पूर्ण वृत्तान्त पढ़ेंगे तो उसके हिन्दुओं पर अत्याचार करने से आपको जो दुःख मालूम होगा, वह निष्प्रयोजन मालूम होगा। क्योंकि वहाँ से आपको मालूम हो जायगा कि इसलाम की प्रकृति ही अत्याचार है। जब मुसलमानों ने अपने स्वार्थ के लिये बाप तक को क़ैद किया—भाई भतीजों को मार डाला तो इस प्रकार के स्वार्थी और अत्याचारियों से हिन्दुओं को कष्ट न पहुँचता तो आश्चर्य की बात थी और मुसलमानों ने अपनी प्रकृति के अनुसार ईश्वर को भी न्यायी—दयालु—क्रूर और अत्याचारी बना दिया और यहाँ तक उसकी मान हानि की कि उसको शैतान के मुक़ाबले में लगा दिया। क्योंकि शैतान सदैव ईश्वर के भक्तों को बहकाता है और झूँठ तथा अत्याचारी उसका

कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते और संसार में मुसलमानों के कथनानुसार शैतान की प्रजा क्रूर और अत्याचारी ईश्वर की अपेक्षा बहुत अधिक है।

प्रिय महाशयो! यदि औरंगजेब किसी हिन्दू बादशाह को क़ैद कर लेता और बिना अपराध के उसकी सन्तति को मार डालता तो हमारे मुसलमान भाई उसकी बहुत प्रशंसा कर सकते; परन्तु जब उसने मुसलमान बादशाह को अपने स्वार्थ के लिये क़ैद किया और वह बादशाह कौन? उसका पिता—उसने मुसलमान शाहज़ादों (राजकुमारों) को तबाह किया शाहज़ादे कौन? उसके भाई; परन्तु इस पर भी वह मुसलमान था। क्योंकि वह क्रूर और नृशंस था।

हम कहाँ तक लिखें मुसलमानों के अक़ायद का अजब हाल है न कोई बात माक़ूल है न संसार के लिये लाभकारी—वस्तुतः मुसलमानी मत स्वार्थपरता का स्रोत है और आत्मिक बातों का शत्रु है। इसका प्रत्येक विश्वास केवल ईमान ही ईमान है और कुछ नहीं, न तो इसके पैग़म्बर साहब सत्य विद्या से अभिज्ञ थे और न आध्यात्मिक विषय में उनका प्रवेश था, प्रत्युत वे संसार और विषय भोगों के दास थे, जो कि स्पष्ट रीति पर प्रकट है कि साधारण मुसलमानों के लिये चार स्त्रियाँ बतलाईं और जब हज़रत की अपनी इच्छा चार स्त्रियों से पूरी न हुई तो ग्यारह निकाह कर डाले, चार की सीमा को तोड़ दिया, अपने दत्तक पुत्र की स्त्री को सुन्दरी देखकर उसे बिला निकाह ही बीवियों में सम्मिलित कर लिया और कहा कि मेरा निकाह खुदा ने पढ़ दिया और 'आयशा' से नौ वर्ष की उम्र में समागम किया। निदान कहाँ तक लिखें औरंग वाशिंगटन के लिखे मुहम्मद साहब के जीवन चरित्र के देखने से स्पष्ट विदित होता

है कि इसलाम केवल पोलिटिकल उद्देश्य को पूरा करने और व्यभिचार फैलाने का नाम है, उसमें ईश्वर की पूजा और उसमें सच्चे लक्षणों का लेश तक नहीं। ओं शम्

अक़ायद इसलाम पर अक़ली नज़र। (ख)

प्रिय महाशयो! अक़ायद इसलाम में एक सिद्धान्त शैतान के अस्तित्व का है, जिसको बहुत से लोग 'बदी को ईश्वर' कहते हैं; परन्तु ये शैतान बड़ा ज़बरदस्त मालूम होता है, उसके हाथ से इसलाम के किसी पैग़म्बर को मुक्ति नहीं मिली। इसी शैतान ने आदम को बहकाकर बुराई और भलाई के विवेक का फल खिलाया था, जिससे मुसलमानों का आदि पुरुष ईश्वराज्ञा का उल्लंघन करनेवाला समझा जाकर बहिस्त (स्वर्ग) से निकाला गया। इसी प्रकार लगभग इसलाम के प्रत्येक वृद्ध पुरुष को तंग किया—आप कहेंगे कि शैतान कौन है? इसकी कहानी इस शुभ पुस्तकों में इस प्रकार पाई जाती है कि ये 'अज़ाज़ील' नामक फ़रिश्ता था—जिस समय ईश्वर ने आदम को उत्पन्न किया, उस समय समस्त फ़रिश्तों को आज्ञा दी कि आदम को सिजदा करें (शिर झुकावें) प्रत्येक फ़रिश्ते ने सिजदा किया परन्तु "अज़राईल" ने जो ईश्वर का भक्त और परम आस्तिक था, इसने मनुष्य पूजा से इनकार किया। बस वह बहिश्त से निकाला गया और उसका नाम शैतान रक्खा।

प्रिय मित्रो! यदि हम इस कहानी को सोचें तो ज्ञात होता है कि मुसलमानी पुस्तकों में उन आस्तिक मनुष्यों को जिन्होंने ईश्वर को छोड़कर मनुष्य पूजा नहीं की या जो ईश्वर के शरीक को बुरा समझते थे, उन्होंने अपनी विद्या के बल पर किसी

मुसलमानी पैगम्बर के असत्य मन्तव्य को स्वीकार नहीं किया—शैतान बना दिया। क्योंकि इसलाम ईश्वर का शरीक माननेवाला है, उनके कलमे (महामन्त्र) में ईश्वर के साथ में मुहम्मद रसूल का रहना आवश्यक है और जो मुहम्मद को रसूल न माने वह मुसलमान नहीं हो सकता। चाहे वह कितना ही विद्वान् और ईश्वर भक्त क्यों न हो ? क्योंकि शैतान से बढ़कर कोई विद्वान् और ईश्वर भक्त मुसलमानी पुस्तकों में पाया नहीं जाता और हजरत आदम को शैतान ने किस वस्तु का फल खिलाया था, जिससे नेकी बदी का उसे विवेक हो गया। लोग जानते हैं कि नेकी और बदी का विवेक किससे होता है ? विद्या अर्थात् ज्ञान से, बस शैतान ने आदम को शिक्षा दी अर्थात् विद्या पढ़ाई, जिससे वह सत्य असत्य अथवा नेकी बदी का विवेक करने लगा—बस, चूंकि उसे ज्ञान हो गया और उससे यह आशा न रही कि प्रत्येक मिथ्या मन्तव्य को भी मानता जावेगा—तब मुसलमानों का ईश्वर घबरा गया और बेचारे आदम को जिसको 'अजाज़ील' जैसे अद्वैत, ईश्वर भक्त, विद्वान् और सच्चरित्र फरिश्ते ने शिक्षा देकर भूल से सत्य का पालन करने के लिये सचत कर दिया था, स्वर्ग से निकाल दिया।

प्रिय मित्रो ! आप समझ गये होंगे कि जिस मनुष्य ने बुराई और भलाई के विवेक के वृक्ष का फल खाया है अर्थात् कुछ बुद्धि प्राप्त की है, वह तो मुसलमानों के स्वर्ग में रह नहीं सकता। हां जिसे भले बुरे का विवेक बिलकुल न हो और जो ईश्वर का शरीक कोई नहीं, वह दावा करता हुआ लाखों फ़रिश्ते और हज़ारों पैगम्बरों को प्रार्थना में सम्मिलित करके यह भी न समझे कि मैं मुशरिक अर्थात् ईश्वर का शरीक माननेवाला हूँ, ऐसे ही लोगों के लिये हूर, खजूर और मद्य की नहरों वाला बहिश्त मौजूद है।

यदि ध्यान से सोचा जावे तो स्पष्ट मालूम होता है कि बुद्धिमान् पुरुष न तो हूरों से समागम पसन्द करते हैं और नहीं मद्यपान को अच्छा समझ सकते हैं। बस उनको स्वयं ही बहिश्त से किनारा करना पड़ता है, केवल मूर्ख और अज्ञों को ही यह बहिश्त पसन्द है।

प्रिय महाशयो ! मुसलमानों का यह विश्वास कि मुसलमानों के ७३ फिरकों में—केवल एक फिरका नाजी और शेष नारी हैं, यह प्रकट करता है कि समस्त मुसलमान धोखे में है, उनको किस प्रकार विश्वास हो सकता है कि कौन-सा फिरका नाजी है। जब कि प्रत्येक फिरके के लोग अपने फिरके को नाजी और दूसरों को नारी बतला रहे हैं और इन फिरकों के उद्देश्य सिवाय मुहम्मद साहब की रिसालत और कुरान के शेष भिन्न-भिन्न हैं; प्रत्युत बहुत से पूर्वापर विरुद्ध भी हैं और वर्त्तमान मुसलमानों के पास फिरकों की भिन्नता प्रकट करने का कोई मार्ग नहीं और नहीं इस सन्देह को दूर करने का अवसर मिलता है। सिवाय ईमान के ऐसी दशा में कुल अहले इसलाम को $\frac{1}{73}$ तो नाजी होने का सन्देह है और $\frac{72}{73}$ सीधे दोजख़ (नरक) में जाने का विश्वास है चूंकि इस प्रकार के संदिग्ध बहिश्त (स्वर्ग) और विश्वस्त दोज़खी (नारकी) मत को संसार में कोई भी स्वीकार करना नहीं चाहता, इसलिये मुसलमानों का ईश्वर विद्या और बुद्धि के स्थान में तलवार के द्वारा इस मत का प्रचार कराता है; परन्तु स्मरण रहे कि तलवार के भय से और वाणी से तो कायर और कमीने लोग मान जाते हैं; परन्तु उनका हृदय उसको स्वीकार नहीं करता। इसलिये वह धूर्त्त बन जाते हैं, उनके हृदय के विचार तलवार के भय से कुछ का कुछ कहते हैं। ये धूर्तता और धोखे-बाजी कौन सिखाता है—मजहब इसलाम या मुसलमानों का

ख़ुदा—क्या ईश्वर के सम्बन्ध में इसमें भी अधिक कोई इलजाम हो सकता है, जो प्रत्येक मुसलमान के हृदय पर मुहम्मद साहब के वचन के अनुसार जमा हुआ है एवं उनके चित्त को सचाई से हटाकर मिथ्या विश्वासों की ओर ले जाता है और उनसे जिहाद (धर्मयुद्ध) कराता है। क्या ईश्वर में यह शक्ति नहीं कि वह प्रत्येक मनुष्य के हृदय को स्वतः सचाई की ओर आकर्षित करे, जिससे उसको धर्म के लिये तलवार चलाने की आवश्यकता न हो।

प्रिय महाशय! इस संदिग्ध मत ने जितना अंधकार और रक्तपात संसार में फैलाया है और जितने ईश्वर के भक्तों को ईश्वराज्ञा से हटाकर व्यभिचार सिखलाया है, उससे बढ़कर संसार के किसी मत में नहीं पाया जाता—हमने जहाँ तक मुसलमानों के सम्बन्ध में विचार किया, हमें उनसे बढ़कर कोई शत्रु ईश्वर और मनुष्यों का दृष्टि नहीं आता—हमारे बहुत से मित्र कहेंगे इसलाम ईश्वर का दुश्मन किस प्रकार है—महाशय! उसका उत्तर यह है कि प्रत्येक मुसलमान तौरेत, जबूर और इंजील को ईश्वरीय वाक्य मानता है, बस उनके माननेवाले यहूदी, ईसाई आदि इसलाम की दृष्टि में ईश्वरीय वाक्य माननेवाले हैं; परन्तु ईसाई और यहूदी कुरान को ईश्वरीय वाक्य नहीं बतलाते और मुहम्मद साहब को उनकी विलासिता, रक्तपात और मूर्खता के कारण पैगम्बर स्वीकार नहीं करते—इस दशा में ईसाई और यहूदी दोनों समुदायों के विश्वास में ईश्वर की आज्ञा के बद्ध हैं और मुसलमान अपने सन्दिग्ध मत के अनुसार ईश्वर के भक्तों और विरोधियों के विचार में नास्तिक; अब मुसलमानों का कर्तव्य तो यह था कि कुरान और मुहम्मद साहब को बुद्धिपूर्वक यहूदियों और ईसाइयों को समझाते; परन्तु उनके पास कोई

प्रमाण नहीं कि जिससे कुरान और पैगम्बर को प्रमाणित करें अब लाचार होकर ईसाई और यहूदी लोगों को तलवार से विचलित करने पर तय्यार हुए, अब बतलाइये कि ईश्वर से विचलित करना और उसके माननेवालों को तलवार के भय से उसकी आज्ञा से पृथक् करके धूर्त्तता सिखलाना सिवाय ईश्वर के शत्रुओं के और किससे सम्भव हो सकता है—

प्रिय मित्रों ! कोई-कोई मौलवी कहते सुने गये हैं कि यहूदियों की तौरेत और ईसाइयों की बाइबिल वह किताब नहीं है, जो ईश्वर ने मूसा दाऊद और ईसा पर प्रकट की थी ; किन्तु यह किताब तो न्यूनाधिक करके इन लोगों ने बना ली है ; परन्तु मुसलमानों का यह दावा बिलकुल निर्बल है ; क्योंकि उनके पास कोई सही लेख तौरेत का विद्यमान नहीं है। और कुरान शरीफ़ की २७ वीं आयत सूरत बकर सिपारह अव्वल में लिखा है कि "तुम किस तरह बहिर्मुख हो, खुदा से और पहले तुम थे बेजान—"फिर उसने तुमको जिलाया फिर मारेगा फिर वापिस जाओगे" प्यारे मुसलमान भाइयो ! तनिक सोचो तो सही इस आयत से क्या मालूम होता है। अव्वल ये ख़याल करो कि 'तुम' का शब्द शरीर के लिये आया है या जीव के लिये ? या दो मिली हुई वस्तुओं के लिये ? यदि कहो शरीर के लिये तो शरीर का अनादि होना सिद्ध होता है और यदि जीव के लिये तो कहो कि जीव कभी बेजान रहता है या नहीं ? क्योंकि जीव को तो जीवन कहते हैं। यदि कहो कि संयुक्त के लिये तो भी असत्य है ; क्योंकि संयुक्त कभी बेजान हो नहीं सकता। जब बेजा न था, तब संयुक्त अर्थात् जीव और शरीर मिला हुआ नहीं था। जब संयुक्त हुआ तो बेजान नहीं। इस दशा में इस प्रकार के विद्या और बुद्धि के विपरीत अनुभव को ईश्वर के गले मढ़ना ईश्वर की हतक

करके दोज़ख़ (नरक) में जाने का सामान करना है—और इसी सूरत बकर की छठी आयत में लिखा है कि "जब कहा तेरे रब (ईश्वर) ने मुझको बनाना है ज़मीं में एक नायब बोले क्या तू कहेगा उसमें जो शख़्श फ़िसाद करे वहाँ और करे ख़ून और तस-बीह (माला) करते हैं और याद करते हैं तेरी ज़ात पाक को हम—कहा मुझको मालूम है जो तुम नहीं जानते" प्यारे मुसलमान भाइयो ! तनिक पक्षपात को दूर करके सोचो कि नायब उस जगह होता है, जहाँ स्वयं अफ़सर न हो। क्या इससे सिद्ध नहीं होता है कि मुसलमानों के विश्वास में ईश्वर पृथ्वी पर नहीं और आदमी उसके नायब हैं और फ़रिश्तों के समझाने पर भी ख़ुदा को समझ न आई और उसने दुनिया में रक्तपात फैलाया और फिर नूह के समय में तूफ़ान लाकर दुनिया को तबाह किया और अपने किये पर अफ़सोस किया और आयत ३१, ३२ और ३३ के देखने से तो ख़ुदा पर बहुत से दोष आरोपण होते हैं सूरत ३१ "और सिखलाये आदम को नाम सारे फिर वह दिखाये फ़रिश्तों को—कहा बताओ नाम उनके अगर हो तुम सच्चे" आयत ३२—बोले कि तू सबसे निराला है, हमको मालूम नहीं मगर जितना तू ने सिखलाया तू है दाना और हकीम, आयत ३३—कहा ऐ आदम बता दे उनको नाम उनके फिर जब उसने बताये नाम उनके कहा मैंने न कहा था मुझको मालूम है पर्दे आसमान और ज़मीन के और मालूम है जो तुम जाहिर करते हो और छिपाते हो" क्या ये बात ख़ुदा को लाज़िम है कि एक आदमी को सिखलादे और दूसरों के लिये कहे पूछ कर देख लो। जब कि फ़रिश्तों ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि हमको इसी क़दर मालूम है, जिस क़दर तूने सिखलाया और आदम को भी उसी क़दर मालूम था, जिस क़दर ख़ुदा ने सिख-

लाया था। इससे ख़ुदा ने आदम की क्या बुजुर्गी मालूम की, जिससे साधु प्रकृति फ़रिश्तों को छोड़ दुष्ट प्रकृति और अल्पज्ञानी आदम को नायब बनाया। कोई न्यायाधीश शासक भी अपने शिष्यों से इस प्रकार की अनुचित रिआयत नहीं करता और न मकर फैलाता है ; क्योंकि जिसको शिक्षा दी है, उसी में से उससे प्रश्न करता है ; परन्तु मुसलमानों का खुदा अद्भुत प्रकार का है, कि फ़रिश्तों को कम बतलाकर अधिक प्रश्न करता है आदम को सिखलाकर उससे पूछ लेता है और उससे अपनी शेखी और आदम का महत्त्व स्थापन करता है। ऐसे फरेबी और शेखीबाज खुदा को तो कोई बुद्धिमान खुदा नहीं कहता। सिवाय अशिक्षितों के—इसी सूरत बकर की आयत ४६ में लिखा है—"और जब हमने चीरा तुम्हारे लिये दरिया फिर बचा दिया तुमको फरओन के लोगों से तुम देखते थे।"

प्यारे पाठको ! यहां मुसलमानों का खुदा अद्भुत प्रकार क बातें कर रहा है ; क्योंकि जो घटनायें मूसा के समय में हुई थीं, उन्हें मुहम्मद के समय में लोग किस प्रकार देख सकते थे और मुसलमानों के विश्वास के अनुसार तो यह बात स्पष्टतया झूठ मालूम होती है ; क्योंकि मूसा के समय में जो लोग मर गये, वह कयामत के रोज उठेंगे और मुहम्मद के समय के जो थे, उन्होंने दरिया का फटना बिलकुल नहीं देखा। बस उनको कहना तुम देखते थे, बिलकुल झूठ है। दूसरे मूसा के समय जिन लोगों को बचाया था, वह तो मर चुके थे और मुहम्मद के समय के लोगों को कहना कि हमने तुम को बचाया था यह और झूठ है, जब मुसलमानों का खुदा लोगों के मुँह पर झूठ बोलता है तो उसके दरिया चीरने को सही सलझना मूर्खता है—यहाँ पर तो कुरान उसी लोकोक्ति को चरितार्थ कर रहा है कि मेरे

दादा मेरे भइया या तुम मेरा हाथ सूँघ कर देख लो। प्यारे नाज़रीन ! आगे चल कर आयत पाँच में मुसलमानों का ख़ुदा फ़रमाता है कि—"जब हमने वादा किया मूसा से चार जात की इबादत कर ; लेकिन तुमने गोशाला को पूजा, तुम बेइंसाफ़ हो। विचार का स्थल है कि मूसा के वादे और क़ुरान के ज़माने से क्या सम्बन्ध है. न तो मुहम्मद के ज़माने के लोगों ने गोशाला पूजा और न उन्हीं से ख़ुदा ने कोई वादा किया—हम नहीं जानते फिर क्यों बेचारों को बेइंसाफ़ बतलाया गया। अगर यही दशा ख़ुदा की रही तो कुल अहले इसलाम के वास्ते दोज़ख़ (नरक) आवश्यक होगा। क्योंकि मूसा, ईसा—इब्राहीम आदि पैग़म्बरों से और मुसलमानों के ईश्वर से जो प्रतिज्ञापत्र हुए हैं, उनके अनुसार अमल न करने से सबको नरक में जाना होगा यदि प्रतिज्ञापत्रों की तामील करना चाहें तो वह प्रतिज्ञापत्र विद्यमान नहीं, किस प्रकार मालूम करें कि ये प्रतिज्ञापत्र हुए थे।

प्रिय पाठको ! मुसलमान लोग शफ़ाअत के भी कायल हैं ; परन्तु ये सिद्धान्त भी विद्या और न्याय से बहुत दूर पहुँचानेवाला है, यहाँ पर प्रश्न उत्पन्न होता है कि मुहम्मद साहब नेकचलन आदमियों की शफ़ाअत करेंगे या बदचलनों की अथवा दोनों की यदि कहो नेकों की तो व्यर्थ है ; क्योंकि नेक तो ईश्वर के न्यायानुकूल अपने शुभ कर्मों के कारण बहिश्त (स्वर्ग) में जायँगे ही, उनको शफ़ाअत की कोई आवश्यकता नहीं यदि कहो बदों की शफ़ाअत करेंगे तो शफ़ाअत का सिद्धान्त नितान्त पापों का फैलानेवाला है। क्योंकि मुसलमानों को विश्वास हो गया है कि अपराधी मुहम्मद साहब की शफ़ाअत से बख़्शे जावेंगे तो वह पाप से क्यों डरेंगे यदि नेक और बद दोनों की शफ़ाअत करेंगे तो इसलाम अँधेर नगरी हो जायगी—और दूसरे. इस

मसले से शिर्क भी सिद्ध होता है, इसलिये यह सिद्धान्त बुद्धि के बिलकुल विपरीत है।

प्रिय महाशयो! इसलाम का सिद्धान्त जिहाद (धर्म युद्ध) सबसे प्रबल सिद्धान्त है, जिसकी आड़ में मुसलमान लाखों निरपराधियों का रक्तपात करके बजाय खूनी और नृशंस होने के अपने लिये गाज़ी और शहीद समझते हैं। यही सिद्धान्त है जिससे मालूम होता है कि इसलाम मज़हब नहीं बल्कि पोलिटिकल समुदाय है; क्योंकि मज़हब का सम्बन्ध दिल से है और कोई मनुष्य किसी को तलवार के ज़ोर से, उसके हार्दिक विचारों से पृथक् नहीं कर सकता, यही कारण है कि लाखों आदमी प्रकट में मुसलमान हो जाते हैं; परन्तु उनके दिल पूर्व की भाँति अपने पैतृक भाव और चाल चलन की ओर लगे रहते हैं—बहुत से ऐसे मुसलमान अब भी मौजूद हैं कि जिनको अक़ायद इसलाम पर तनिक भी विश्वास नहीं और न वह उसे सच्चा मज़हब ख़याल करते हैं। आप लोग कहेंगे कि ऐसे लोग अपने पैतृक धर्म पर क्यों नहीं चले जाते, ताकि उनको नित्य प्रति अपने आत्मा के विरुद्ध काम करने के कष्ट से मुक्ति मिले; परन्तु क्या किया जावे, रूम, यूनान, ईरान, अरब, अफ़ग़ानिस्तान वग़ैरह की मूर्ख जातियाँ तो किसी प्रकार भी अपने पैतृक धर्म को इसलाम से अच्छा कह नहीं सकतीं; क्योंकि मुद्दतों से इनका मज़हब दूर हो गया है और अब उनके ख़यालात भी ज़माने में कम पाये जाते हैं। रहे भारतवर्ष के मुसलमान, इनमें लाखों आदमी हैं, जिनके ख़यालात उनके असली मज़हब की तरफ़ जाना चाहते हैं; परन्तु वह हिन्दू बिरादरी की ग़लती से अपने असली मज़हब में आ नहीं सकते। बहुत से मुसलमान हैं कि जिनको मालूम है कि उनके बाप, दादे जबरन मुसलमान किये गये, नहीं-

नहीं बल्कि वह यह भी जानते हैं कि इन नृशंस मौलवी मुल्लाओं ने हमें अपने उच्च धर्म से गिराया और अपने भाइयों से पृथक् किया, हमारे पैतृक भाई हमसे घृणा करने लगे—इसी प्रकार के विचार और भी बहुत से मुसलमानों के हृदय में विद्यमान् हैं; क्योंकि भारतवर्ष में कोई समझ कर तो मुसलमान हुआ नहीं। बहुत से मुसलमान तो वह हैं कि जिनके बाप-दादों को तलवार के जोर से कट्टर मुल्लाओं ने उनके सत्य धर्म से पृथक् कर दिया था और उनको अब इस प्रकार की शिक्षा देते हैं कि मजहब में अक़ल की दखल नहीं, इसलिये वह इसलाम में मौजूद हैं; परन्तु उनके दिल बशर्ते गैरत और सचाई के इसलाम के शत्रु हैं; परन्तु विवशतः देश काल के विचार से इसलाम के आधीन हैं—दूसरे वह मुसलमान हैं, जो वेश्या आदि की मित्रता के कारण उनके खाने पीने में सम्मिलित हो गये—उन लोगों को तो मुसलमानी मत से कोई सम्बन्ध ही नहीं केवल अपनी बिरादरी के दबाव से, जो उनको रण्डियों के साथ खाने पीने से रोकता था, बचकर वह विषय भोगों के दास बन रहे हैं।

तीसरे वह हैं, जो बादशाही समय में धन और प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिये मुसलमान हो गये थे, ये लोग भी वस्तुतः मुसलमान नहीं, केवल संसार के दास हैं।

प्रिय महाशयो! इस प्रकार भारतवर्ष के ¾ हिस्सा मुसलमान इस प्रकार के हैं, जिनका मुसलमानी मत से कोई सम्बन्ध नहीं और न वह इसलाम की बातों को दिल से मानते हैं और न उनका इसलामी पुस्तकों पर विश्वास ही है और न वह उस पर अमल करते हैं। हजारों सूफी व हाजी इत्यादि इसलामी सृष्टि से निराले हैं—नेचरी तो इसलाम को अपने साँचे में ढालना चाहते हैं—निदान इसलाम के तेहत्तर फ़िरकों में बहुत थोड़े आदमी हैं, जो

इसलाम के असली माननेवाले हैं, केवल हिन्दुओं की निर्बलता ने हिन्दुओं को इस कष्ट में डाल रक्खा है कि वह अपने बिछुड़े हुए भाइयों को मिलाते नहीं, अगर आज हिन्दू मिलाना प्रारम्भ करें तो दस वर्ष में भारतवर्ष में इसलाम की वही दशा हो जायगी, जो स्पेन आदि देशों में हुई।